BHDC-134

बी.ए. कार्यक्रम
(बी.ए.जी.)

सत्रीय कार्य
(जनवरी 2023 और जुलाई 2023 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.-134
हिंदी गद्य साहित्य

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

हिंदी गद्य साहित्य
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–134 / 2023

आपको हिंदी गद्य साहित्य पर आधारित पाठ्यक्रम बी.एच.डी.सी.–134 का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के तीनों खंडों पर आधारित है।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ हमारा तात्पर्य पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आपको हिंदी गद्य साहित्य तथा उसकी प्रमुख रचनाओं और उनके रचनाकारों से परिचित कराना है। हिंदी गद्य साहित्य का वास्तविक प्रारंभ आधुनिक युग में हुआ। गद्य की विविध विधाओं के अंतर्गत उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, जीवनी, रिपोतार्ज आदि का अध्ययन निहित है। इस पाठ्यक्रम में आप हिंदी गद्य की तीन विशिष्ट विधाओं उपन्यास, कहानी तथा निबंध का अध्ययन करेंगे और उनकी विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम पर आधारित सत्रीय कार्य से आप यह जान सकेंगे कि आपको हिंदी गद्य साहित्य के संदर्भ में कितनी समझ और दक्षता प्राप्त हुई है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1). ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।

2). अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

3). बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केंद्र का उल्लेख करें जैसे आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : ....

नाम : ....

पता : ....

पाठ्यक्रम का नाम / कोड : ....

सत्रीय कार्य कोड : ....

अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : ....

दिनांक : ....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के खंड 1 तथा 2 तथा 3 पर आधारित है। इसमें तीन भागों के अंतर्गत प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य हिंदी गद्य साहित्य की विशिष्ट रचनाओं और उनके रचनाकारों के गहन अध्ययन के संदर्भ में आपकी लेखन क्षमता की जाँच करना है।

2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। कुछ प्रश्न टिप्पणीपरक हैं। एक प्रश्न में उपन्यास अथवा, कहानी अथवा निबंध से कुछ अंश उद्धृत किए गए हैं जिनकी संदर्भ साहित्य व्याख्या करनी है। इस प्रकार इन प्रश्नों से जहाँ एक ओर आपकी हिंदी गद्य साहित्य

संबंधी समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर आप उपन्यास, कहानी तथा निबंध की व्याख्या–विश्लेषण में भी समर्थ हो सकेंगे। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

3. सत्रीय कार्य पूरा करके इसे जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास अवश्य जमा करा दें।

4. सत्रीय कार्य जमा करने की तिथि :
   - दिसम्बर माह की सत्रांत परीक्षा के लिए – 31 अक्टूबर
   - जून माह की सत्रांत परीक्षा के लिए– 30 अप्रैल

उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाएँगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो।
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

हिंदी गद्य साहित्य
(BHDC 134)
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी–134
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी–134 / टीएमए / 2023
कुल अंक 100

खंड–क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10 × 2 = 20

(क) नाविक उस प्रचण्ड आँधी में प्रकाश की एक–एक किरण के लिए हम लोग कितने व्याकुल थे। मुझे स्मरण है जब मैं छोटी थी, मेरे पिता नौकरी पर समुद्र में जाते थे, मेरी माता, मिट्टी का दीपक बाँस की पिटारी में भागीरथी के तट पर बाँस के साथ ऊँचे टाँग देती थी। उस समय वह प्रार्थना करती, ''भगवान मेरे पथ भ्रष्ट नाविक को अंधकार में ठीक पथ पर ले चलना।'' और जब मेरे पिता बरसों पर लौटते तो कहते–''साध्वी तेरी प्रार्थना से भगवान ने संकटों में मेरी रक्षा की है।''

(ख) गजाधर बाबू ने कोट उतारा और कहीं टाँगने को दीवार पर नजर दौड़ाई। फिर उसे मोड़कर अलगनी के कुछ कपड़े खिसकाकर एक किनारे टाँग दिया। कुछ खाए बिना ही अपनी चारपाई पर लेट गए। कुछ भी हो, तन आखिकार बूढ़ा ही था। सुबह–शाम कुछ दूर टहलने अवश्य चले जाते, पर आते–आते थक उठते थे। गजाधर बाबू को अपना बड़ा–सा खुला हुआ क्वार्टर याद आ गया। निश्चिन्त जीवन, सुबह पैसेंजर ट्रेन आने पर स्टेशन की चहल–पहल, चिरपरिचित चेहरे और पटरी पर रेल के पहियों की खट्–खट् जो उनके लिए मधुर संगीत की तरह था।

खंड–ख

2. द्विवेदी युगीन हिंदी गद्य साहित्य का परिचय दीजिए। 15
3. 'त्याग–पत्र' के आधार पर मृणाल की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15
4. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी (प्रत्येक पर लगभग 200–250 शब्दों में) लिखिए : 5 × 2 = 10
   (क) 'आकाशदीप' की अंतर्वस्तु
   (ख) अंग्रेजों की भाषा नीति

खंड–ग

5. रामचंद्र शुक्ल के जीवन और साहित्य का परिचय दीजिए। 15
6. 'कुटज' के वैचारिक पक्ष की विवेचना कीजिए। 15
7. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी (प्रत्येक पर लगभग 200–250 शब्दों में) लिखिए : 5 × 2 = 10
   (क) 'लोभ और प्रीति' में देश प्रेम का स्वरूप
   (ख) 'सहस्र फणों का मणि–दीप' की भाषा